18 / 01 / 82 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

प्रीत की रीत निभाने की सहज अनुभवी मैं आत्मा

➢➢ संगम पर रूहानी परवानों की ये रूहानी महफ़िल...

➳ _ ➳ अविनाशी शमा का अविनाशी परवाना मैं आत्मा...

→ मेरा प्रियतम अविनाशी, मेरी प्रीत भी अविनाशी हैं...

→ ये सहज प्रीत, और सहज ही प्रीत की रीत हैं...

→ और ये सहज रीत है "गाना, नाचना और सो जाना"...

■ गाना... अपनी और बाप की महिमा के गीत...

■ नाचना.... कर्मयोगी बन कर्म करना...

■ और थक जाए तो, सो जाना... अशरीरी हो जाना...

➳ _ ➳ अमृत वेले से, मैं आत्मा बैठ गयी हूँ अविनाशी प्रियतम के सम्मुख

→ अपने अविनाशी भाग्य का गीत गाती हुई...

→ मेरा ये सर्वश्रेष्ठ ईश्वरीय जीवन,

→ प्रभु प्यार का उपहार..

→ वो बैठा हैं सम्मुख मेरे,

→ जिसे दर-दर ढूंढे है संसार...

→ उसकी महिमा करूँ मैं...

→ पर वो मेरी महिमा करता है...

→ नैनों का नूर कहता कभी...

→ कभी माथे का ताज बताता है...

■ बाप दादा का वरदानी हाथ...

■ अपने सर पर महसूस करती मैं आत्मा...

■ स्वयं को अशरीरी महसूस कर रही हूँ...

➳ _ ➳ मैं अशरीरी आत्मा उड़ चली सूक्ष्म वतन की ओर...

→ सूक्ष्म वतन में मुरलीधर बाबा आज...

→ संकल्पों से मीठी मुरली का मीठा साज सुनाते हुए...

→ कानों में गूंज रहा है उमंग से भर देने वाला...

→ वही मीठा साज...

■ लाडले बच्चे, मीठे बच्चे, सिकीलधे बच्चे...

■ रोम रोम में एक मिठास सी घुल गयी है...

■ गुणों और शक्तियों की मिठास...

■ अविनाशी प्रियतम की अविनाशी प्यार की मिठास...

■ बेहद की ख़ुशी और उमंगों की मिठास...

→ उमंगों से भरकर मैं आत्मा, फ़रिश्ता बाप के साथ...

→ विश्व की आत्माओं को संकल्पों से कर्मयोग की प्रेरणा देते हुए...

→ ख़ुशी में नाचती हाथ पैर चलाती ये आत्माए...

→ सहज ही परिवर्तन के निमित्त बन रही हैं...

➳ _ ➳ अब मैं आत्मा, उड़ चली परम ज्योति के उस देश की ओर...

→ जहाँ दूर दूर तक शांति ही शांति का वास हैं...

→ शांति धाम में, मैं आत्मा, परम साइलेंस की अवस्था में...

→ मुझ तक आती शांति की किरणें... इन किरणों से...

→ मुझ आत्मा में बेहद का अविनाशी प्रेम इमर्ज हो रहा हैं...

→ इस अविनाशी रूहानी प्रेम से भरपूर हुई मैं आत्मा...

■ कल्प वृक्ष की सभी आत्माओं को...

■ एक बाप की अविनाशी प्रीत से भरपूर कर रही हूँ...

➳ _ ➳ मैं आत्मा, वापस लौट आयी हूँ अपनी इस स्थूल देह में...

→ मन बुद्धि से बाप दादा की और...

→ अपनी महिमा के गीत गाती हुई...

→ कर्मेन्द्रियों को आधार बनाकर मैं आत्मा...

→ प्रीत का डांस करती हुई...

■ अविनाशी प्रीत की अनुभवी आत्मा बन रही हूँ...

→ मुरली का मीठा साज सुनती हुई...

→ मैं आत्माभिमानी आत्मा ...

■ थक जाने पर अशरीरी होकर...

■ बाप दादा की गोद का अनुभव कर रही हूँ...